अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस

उड़ने लगी तितलियाँ

''यूं ही नहीं खिलते फूल, सपनों की झोली में, इरादों का खाद पानी मिलाना होता है।
दूसरों से जलने कुढ़ने से कुछ नहीं होगा, अपनी राहों को खुद रोशन करना होगा ।।''

यूं तो दुनिया की आधी आबादी के बारे में आपने बहुत कुछ पढ़ा, सुना, महसूस किया होगा । मैंने भी कुछ सोचा है । नारी संपूर्ण सृष्टि की पहली पहचान है, धार्मिक स्नेह से परिपूर्ण बहन, जीवन रुपा देने वाली मां, जीवन के हिचकोलो में साथ देने वाली पत्नी, घर को चहचहाने वाली बेटी, परिवार, समाज को संस्कार देने वाली नारी... जहां शिशु को थपकी देकर सुलाती है वहीं जीवन के रण में कुशल योद्धा भी तैयार करती है । वह सहनशीलता के साथ जहां जरुरी है वहां तार्किक भी होती है । फिर भी संसार की यह रचियता दम्भ की मारी नहीं, उसका आत्मविश्वास किसी को चुनौती नहीं देता । अगर हाथ उठाये तो पर्वत भी सकुचाकर परे हो जाये, पर वह केवल नमन करती है । अपनी क्षमताओं को चुनौती देने वाले को यदि ललकारे तो आसमां भी थर्रा जाये पर वह मौन रहती है ।

हम ऐसे समाज में रहते है जहां नैतिकता और आदर्शवादिता बनाई तो पुरुषों द्वारा जाती है पर उस पर चलती महिलाएं है इसलिए नहीं कि वे संकीर्ण मानसिकता की है बल्कि अपितु कि वे समाज को सभ्य देखना चाहती है ।

आज चारों ओर एक ही गूंज कि महिलाओं को आगे बढ़ाओं, सरकार ने भी उन्हें सुरक्षित करने के लिए बहुत से कानून बनाये है, प्रश्न, ये है कि महिलाओं को पीछे किया किसने ? वैसे कोई किसी को ना आगे बढ़ा सकता है और ना ही बढ़ने से रोक सकता है । आज की नारी को जो अच्छा लग रहा है वह कर रही है, फिर चाहे वह घर से भागकर शादी करना हो, ब्यूटी पार्लर से सजधज कर नाभि दर्शना वस्त्रों के साथ बारात में सड़कों पर थिरकना हो, अपने पारिवारिक, सामाजिक दायित्वो को दरकिनार करके, बहुत से ऐसे कार्य करना जो ना तो नारी सुलभ है, ना ही सम्मानीय । उन्हें कौन रोक पा रहा है, ना ही परिवार ना ही समाज । हमारी सामाजिक व्यवस्था भले ही पुरुष प्रधान हो लेकिन... उसमें भी बदलाव की शुरुआत हो चुकी है । महिलाओं ने अपने फैसले लेना शुरु कर दिया है... अपने भले बुरे की परख करके यदि महिलाएं परिवार और समाज उत्थान के लिए कुछ कदम उठाती है तो पुरुष समाज भी गौरवान्वित होता है ।

धीरे-धीरे ही सही महिलाओं के प्रति समाज के नजरिए में भी परिवर्तन आ रहा है । एक साथ एक दम से... शत प्रतिशत बदलाव ना तो हो सकता है और ना ही ऐसे बदलाव के लिए उग्र रुप धारण करना चाहिए । संतुलन के साथ... आगे बढ़ने में सहयोग मिलेगा ।

मुख्य बात- योग्य बने... शिक्षित बने... समझदार बने, न जलनशील बने न ज्वलनशील

वक्त के साथ पुरुषों ने भी, श्रेष्ठता बोध के ऐतिहासिक संस्कारों को शिथिल किया है, वह अब स्त्री को ना कम ना ज्यादा बल्कि बराबरी का स्वीकार कर रहा है ।

अच्छी बात है कि आज स्त्री समझ रही है कि खुबसूरत कपड़े और प्रसाधनों से ज्यादा बुद्धि और हुनर की चमक होती है । आज की स्त्री... आत्मविश्वास और आत्मगौरव से दीप्त पहले से ज्यादा खुबसूरत स्त्री है । वह कलम में धार और कैमरे पर पैनापन ला रही है ।

वह सम्झ चुकी है कि यह उसके लिए स्वर्णिम काल है, जब समाज में स्त्री सम्मान की ओर अंगड़ाई ले रही है, हमें इस परिवर्तन की सुगबुगाहट से समाज को एक नई दिशा देने का मौका मिलता है । हमें उस पतंग की तरह खुले आसमां में उड़ना है जिसकी डोर हमारे नैतिक मूल्यों और संस्कारों से बंधी हो।

आज दिखाने का वक्त है कि स्त्री एक बालक को संस्कारों से पोषित करके महावीर, बुद्ध, शिवाजी और सम्राट अशोक बना सकती है, तो अपनी शिक्षा अपने कौशल के द्वारा अंतरिक्ष में बैठकर भारतीय व्यंजन भी खा सकती है । पर हमें कोशिश करना होगा कि हमारे कदम किसी भी प्रलोभन में डगमगाये ना ? कोई ये ना इल्ज़ाम लगा पाये कि, औरतों के लिए घर की चार दीवारी ही ठीक है ।

- साधना जैन, आकाशवाणी उद्घोषिका, भोपाल

मार्च का महीना अर्थात बच्चों और माता पिता की परीक्षाओं का समय । गहन अध्ययन और कठोर परिश्रम से आप सभी उच्चांक प्राप्त करें । इसके लिए गोलालारीय दर्शन परिवार की ओर से ढ़ेर सारी शुभकामनाएँ । परीक्षा परिणाम आने के पश्चात आपको एक और जिम्मेदारी पूर्ण करना है । अपनी अंकसूची की फोटोकॉपी और अपना पासपोर्ट फोटोग्राफ हम तक अवश्य भेजें ताकि आगामी अंक में प्रकाशित होने वाले प्रतिभाशली छात्र छात्राओं में आपका नाम जुड़ सके । आगामी अंक में आवेदन पत्र प्रकाशित होगा, जिसे पूर्ण एवं स्वच्छ रुप भरकर समय पर हमारे कार्यालय में भेजना न भूले ।

शब्द जाल प्रतियोगिता-

प्रस्तुत शब्दगोल पहेली में आपको 'आ' अक्षर से बनने वाले शब्द लिखना है । प्रथम प्रश्न उदाहरण स्वरुप हल किया गया है ।

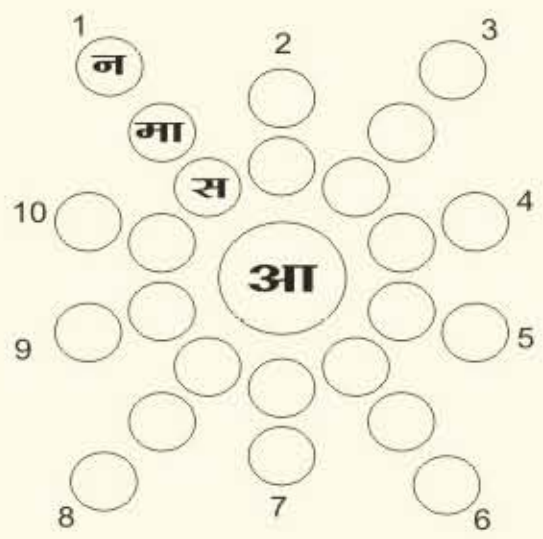

शब्द जाल प्रतियोगिता 12 के विजेता

निर्मला जैन
इन्दौर

श्रुति जैन
जबलपुर

सीमा जैन
बाकल

कु. शचि जैन
जखोरा

कु. श्रति जैन
गंजबासौदा

विनीता जैन
नागपुर

सुषमा जैन
नागपुर

ध्रुव जैन
विदिशा

सीमा जैन
विदिशा

अशोक जैन
बालाघाट

पारस जैन
झांसी

कु. मंजिल जैन
लिधौरा

संकेत - 1) नीचे धरती, ऊपर है ..... 2) ईश्वर में विश्वास रखने वाला.... 3) बुजुर्गो द्वारा दिया जाता है .... 4) मुनियों का भोजन कहलाता है... 5) तेरह पंथ और बीस पंथ हैं 6) किसी का विरोध जताने के लिये करते है... 7) अपनी मदद करने पर हम दूसरों का करते है... 8) हमें सदैव करना चाहिये अच्छा... 9) दिन के समय करना चाहिये... 10) संतों का चरित्र होता है...

निम्नलिखित पते पर भेजें - **'गोलालारीय दर्शन' 16, महारानी रोड, इन्दौर या 64, न्यू देवास रोड, इन्दौर** । प्राप्त सही प्रविष्टियों का ड्रा निकालकर प्रथम 5 विजेताओं को के नाम निकालकर आगामी अंक में उनके फोटो भी प्रकाशित किये जायेंगे । ❊ **नियम** - प्रतियोगिता सभी आयु वर्ग महिला / पुरुष / बच्चों के लिए है। प्रविष्टि भेजने की **अंतिम तिथि 15 अप्रैल 2016** सही जवाब के साथ प्रतियोगी परिवार प्रमुख का नाम, टेलीफोन नंबर एवं प्रत्याशी का नवीन फोटो लगाकर पूर्ण पता मय पिनकोड के साथ अवश्य भेजें । संपादक मंडल का निर्णय अंतिम एवं सर्वमान्य होगा । अपूर्ण जानकारी होने पर प्रविष्टी को निरस्त किया जा सकता है ।

पत्रिका में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने है, सम्पादक मण्डल का इससे सहमत होना आवश्यक नहीं है । किसी भी प्रकार का विवाद होने पर न्याय क्षेत्र इन्दौर रहेगा ।

स्वामी श्री गोलालारीय दिगम्बर जैन समाज न्यास के लिए प्रकाशक, मुद्रक बाहुबली जैन द्वारा प्रकाशित प्रतीक्षा ग्राफिक्स127, देवी अहिल्या मार्ग इन्दौर से मुद्रित एवं ग्राफिक्स ज़ील कम्प्यूटर एंड ग्राफिक्स 356, तिलक नगर श्री गोलालारीय दि. जैन समाज न्यास, 64, न्यू देवास रोड, इन्दौर (म.प्र.) से प्रकाशित